नईदुनिया

संपादकीय

शैक्षिक ढांचे पर सवालिया निशान

बीते वर्ष की वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट के निष्कर्ष विचलित करने वाले हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि देश के सरकारी स्कूलों में 56 फीसदी किशोर गणित की सामान्य प्रक्रियाएं नहीं कर पाते। करीब 25 फीसदी छात्र क्षेत्रीय भाषा में कक्षा-दो का पाठ भी धाराप्रवाह ढंग से नहीं पढ़ पाते। करीब आधे छात्र यदि भाग व गुणा जैसी सामान्य गणिती क्रियाएं नहीं कर पाते तो यह हमारे शैक्षिक ढांचे पर सवालिया निशान है। आखिर क्या वजह कि करीब 43 फीसदी छात्र अंग्रेजी के सामान्य वाक्य पढ़ने में असमर्थ हैं? बुधवार को जारी वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट के निष्कर्ष नि:संदेह परेशान करने वाले हैं कि आने वाले भारत का भविष्य कैसा होगा? कालांतर जैसे-तैसे पढ़-लिखकर ये छात्र बेरोजगारों की संख्या बढ़ाने के अलावा और क्या कर सकते हैं? पहली बार देश के 26 राज्यों के 28 जिलों में किशोरों का सर्वेक्षण किया गया। बच्चों की गणित व अंग्रेजी की स्थिति देखकर साफ है कि प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बच्चों की बुनियादी पढ़ाई और गणित की शिक्षा में तत्काल सुधार की आवश्यकता है। दरअसल, एएसईआर के इस सर्वेक्षण में 14 से 18 वर्ष के 34,745 छात्रों को शामिल किया गया था। बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के दो ग्रामीण जिलों तथा शेष राज्यों के एक-एक ग्रामीण जिले को सर्वेक्षण में शामिल किया गया । हालांकि, अच्छी बात यह है कि 14 से 18 वर्ष के करीब 87 फीसदी बच्चे स्कूलों में नामांकित हैं। लेकिन उनमें से अधिकांश बुनियादी पढ़ने, गणित और अंग्रेजी ज्ञान में बुनियादी कौशल का प्रदर्शन नहीं करते हैं। हालांकि, सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि सर्वेक्षण में शामिल नब्बे फीसदी बच्चों के पास स्मार्टफोन हैं और उन्हें यह चलाना बखूबी आता है। सबसे परेशान करने वाला सवाल यह है कि क्यों 25 फीसदी छात्र अपनी क्षेत्रीय भाषा में कक्षा दो का पाठ भी धाराप्रवाह रूप से नहीं पढ़ सके। वैसे गणित व अंग्रेजी में परिस्थितिजन्य व पारिवारिक माहौल के चलते कमजोरी की बात तो समझ में आती है।

दरअसल, अकसर बच्चे गणित को एक नीरस विषय के रूप में लेते हैं, जबकि आजकल बिना गणित के जीवन का अर्थशास्त्र चलाना बेहद मुश्किल है। सर्वे का एक पक्ष यह भी कि लड़कियों का क्षेत्रीय भाषा में धाराप्रवाह पाठ पढ़ने का प्रतिशत 76 रहा, जबकि किशोरों में यह प्रतिशत 71 था। जबकि गणित व अंग्रेजी में किशोरों का प्रदर्शन किशोरियों से बेहतर रहा है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम में इनकी भागेदारी महज 5.6 प्रतिशत है। सर्वेक्षण में हरियाणा के सिरसा, पंजाब के एसएएस नगर, जम्मू-कश्मीर में अनंतनाग, हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा, राजस्थान में भीलवाड़ा और उत्तराखंड के टेहरी गढ़वाल शामिल थे। दरअसल, इस संकट के सभी पहलुओं पर विचार करना चाहिए। सामान्यत: ग्रामीण इलाकों में अधिकांश बच्चे कमजोर वर्ग या खेती-किसानी से जुड़े परिवारों से आते हैं। अंग्रेजी का कमजोर होना तो समझ में आता है, लेकिन क्षेत्रीय भाषा पठन में फिसड्डी होना चौंकाता है। यह निष्कर्ष सरकारी शिक्षकों की शिक्षण शैली और सीखने की प्रक्रिया में रुचि बढ़ाने की कोशिशों पर भी सवाल उठाता है। समय के साथ-साथ कहीं न कहीं शिक्षकों का वह रुतबा भी कम हुआ है जो छात्रों को सख्त अनुशासन के दायरे में लाता था। शिक्षकों की नियुक्ति के तौर-तरीके, राजनीतिक हस्तक्षेप से होने वाली नियुक्तियां तथा जवाबदेही जैसे सवाल भी सामयिक हैं। एक बड़ा संकट किशोरों के पास स्मार्टफोन का होना और बच्चों को उसकी लत का होना भी है। विडंबना देखिये कि पचास फीसदी से अधिक किशोर-किशोरी गणित की सामान्य जोड़-घटाव की प्रक्रिया पूरी नहीं कर पाते हैं, लेकिन स्मार्टफोन की जटिल प्रक्रिया के संचालन में पारंगत हैं। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही कही जाएगी कि मोबाइल की लत नई पीढ़ी के बच्चों की वह एकाग्रता भंग कर रही है जो उन्हें निरंतर पढ़ाई के लिये चाहिए। आने वाले समय में मोबाइल के अधिक प्रयोग से होने वाले दुष्प्रभाव भी नजर आएंगे। खासकर आंखों व गर्दन से जुड़े शारीरिक विकार सामने आएंगे। यही वजह है कि जागरूक अभिभावक बच्चों को स्कूल व एक उम्र तक घर में स्मार्टफोन देने को घातक मानते रहे हैं।

भारत से लेकर सारी दुनिया हुई राममय

धर्म

-आरके. सिन्हा

कई सप्ताह से पूरा विश्व उत्सुकता के साथ 22 जनवरी के ऐतिहासिक क्षण का इंतजार कर रहा है। दक्षिण पूर्वी एशियाई देश हों या फिर यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या जर्मनी से जापान तक सभी राममय हो रहे हैं। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम अमेरिका के टाइम्स स्क्वायर से लेकर यूरोप के एफिल टावर तक देखने को मिलेगा।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में 21 जनवरी को 'रामरथ यात्रा' का आयोजन किया जाएगा, जिसमें पूरे यूरोप से हजारों लोग भाग लेंगे। इतना ही नहीं, एफिल टावर के पास भव्य उत्सव भी मनाया जाएगा। इसी तरह अमेरिका में टाइम्स स्क्वायर पर 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का लाइव टेलिकास्ट किया जाएगा। नॉर्थ अमेरिका से लेकर कनाडा तक के मंदिरों में पूजन और दीपोत्सव किया जाएगा। अमेरिका में कैलिफोर्निया के साथ ही वाशिंगटन, शिकागो और अन्य शहरों में विशाल कार रैलियाँ आयोजित की जा रही हैं।

दुनिया के 50 से अधिक देशों में बड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इन देशों में प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम को लाइव देखा जा सकेगा। अमेरिका में 300, ब्रिटेन में 25, ऑस्ट्रेलिया में 30, कनाडा में 30, मॉरीशस में 100 के अलावा आयरलैंड, फिजी, इंडोनेशिया और जर्मनी जैसे 50 से अधिक देशों में बड़े पैमाने पर रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट किए जाने की तैयारी है। न्यूयार्क के मेयर एरिक एडम्स ने कहा भी कि अयोध्या में राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सिर्फ भारत ही नहीं, न्यूयार्क में दक्षिण एशियाई और इंडो कैरेबियाई समुदायों के हिंदुओं के लिए भी जश्न मनाने का मौका है। प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर नेपाल से 3 हजार से अधिक उपहार अयोध्या पहुंच रहे हैं। जनकपुर से सीताजी के लिए साड़ी, चांदी के जूते, आभूषण आदि

उपहार भेजे गए। श्रीलंका ने अशोक वाटिका से विशेष पत्थर अयोध्या भेजा है। मॉरिशस ने तो अपने यहां 22 जनवरी को अवकाश भी घोषित किया है। बकायदा, 2 घंटे का विशेष अवकाश पूजा पाठ के लिए प्रदान किया गया है।

राममंदिर उद्घाटन कार्यक्रम में कुल 7 हजार से अधिक मेहमान शामिल होंगे। इसमें बड़ी संख्या में विदेशी मेहमान भी होंगे। गेस्ट लिस्ट में अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका सहित 53 देशों के मेहमान शामिल हैं। अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फिजी समेत 50 देशों के प्रतिनिधियों को भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर अयोध्या आने का निमंत्रण पत्र दिया गया है। मुस्लिम बहुल देशों में भी प्राण प्रतिष्ठा को लेकर तैयारियों में उत्साह है। इंडोनेशिया, सऊदी अरब में भी प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण किया जाएगा।

विश्व हिंदू परिषद के अनुसार दुनिया के 160 ऐसे देश हैं जहां हिंदू धर्म के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। वहां विभिन्न धार्मिक आयोजन किए जा रहे हैं। इनमें शोभायात्रा, हवन पूजन, हनुमान चालीसा पाठ आदि के आयोजन शामिल हैं।दरअसल, राम भारत ही नहीं विश्व चेतना के आधार हैं। विश्व इतिहास और विश्व साहित्य में भी राम और रामकथा बहुप्राचीन एवं बहुप्रचलित है। इंडोनेशिया में काकाविन रामायण, जापान में होबुत्सुशू, थाइलैंड में रामकियेन, म्यांमार में रामवस्तु, राम-ताज्या, राम- तात्यो, थिरी राम, पोन्तव राम तथा थामाध्ये (रामलीला नाटक), कम्बोडिया में रामकेर, फिलीपीन्स में महारादिया लावना, मलेशिया में मलय रामायण, हिकायत सेरी राम, लाओस में फालम, मंगोलिया में राम ग्रंथ प्रचलित और लोकप्रिय हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे प्राचीन और सर्वाधिक महत्वपूर्ण राम कथा केंद्रित कृति प्राचीन जापानी भाषा में विरचित रामायण का काबीन है, जिसकी तिथि नौवीं शताब्दी से भी पहले की है। लाओस के निवासी आज भी स्वयं को भारतवंशी मानते हैं। वे मानते हैं कि कलिंग युद्ध के बाद उनके पूर्वज इस क्षेत्र में आकर बस गये थे। लाओस की संस्कृति पर भारतीयता की गहरी छाप है। यहां रामकथा पर आधारित चार रचनाएं उपलब्ध है। दक्षिण पूर्व एशिया समेत अन्य देशों में रामकथा का व्यापक असर देखा जा सकता है। आम जनमानस की जिंदगी में राम के चरित्र की गहरी छाप दिखती है। इस बीच, अयोध्या से सैकड़ों किलोमीटर दूर राजधानी दिल्ली के अशोक विहार में भी राम लला के मंदिर जैसा ही एक राममंदिर का निर्माण हो रहा है। इन दोनों मंदिरों के आर्किटेक्ट सीबी सोमपुरा ही हैं। सोमपुरा जी को विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष अशोक सिंघल अयोध्या (वीएचपी) लेकर गए थे ताकि वे रामलला के मंदिर का डिजाइन बनाएं। फिर सोमपुरा जी ने ही अयोध्या के राममंदिर का डिजाइन बनाया।

हालांकि दिल्ली के अशोक विहार के श्रीराम मंदिर की स्थापना तो 1975 में हो गई थी, पर इसका विस्तार आगे भी होता रहा। इसकी मैनेजमेंट से जुड़े हुए अशोक बंसल बताते हैं कि जब सोमपुरा जी और विश्व हिन्दू परिषद ने अयोध्या में राममंदिर का डिजाइन जारी किया तब हमने भी तय किया हमारे मंदिर का डिजाइन भी अयोध्या के राममंदिर की तर्ज पर ही रहेगा। इसकी अयोध्या के राममंदिर से एक समानता यह भी है कि यहां भी राजस्थान के बंसीपुर का लाल संगमरमर का गुलाबी पत्थर ही लगा है। इन दोनों मंदिरों के निर्माण में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा तो है ही। वे अयोध्या के रामलला के मंदिर के निर्माण पर शुरू से ही नजर रख रहे थे, तो उनकी प्रेरणा से अशोक विहार का राममंदिर भी बना। इस बात को यहां के पदाधिकारी भी मानते हैं। हां, दोनों में सिर्फ इतना अंतर है कि अशोक विहार का श्रीराम मंदिर स्थानाभाव के कारण छोटा है।

जब आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में रामलला का प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हो रहा होगा,तब अशोक विहार के श्रीराम मंदिर में सुबह से ही सुंदर कांड और भजन के कार्यक्रम शुरू हो जाएंगे। सारे मंदिर में आलोक सज्जा और विशाल भंडारे का कार्यक्रम तो होगा ही। माना जा रहा है कि 22 जनवरी को यहां भी करीब एक लाख भक्त आएंगेऔर भंडारे का प्रसाद पायेंगे।

चीन को दरकिनार कर भिड़े ईरान-पाक

मुद्दा

- पुष्परंजन

सिस्तान बलूचिस्तान प्रांत के जिस गांव में 18 जनवरी, 2024 को पाक मिसाइलों के हमले से तीन महिलाएं और चार बच्चों समेत नौ लोगों की मौत हुई है, उसमें यह दावा किया गया कि इनमें से कोई भी ईरानी मूल का नहीं है। यानी, ईरान इस 'दोस्ताना हमले' का बुरा नहीं माने। इससे दो दिन पहले 16 जनवरी, 2024 ईरान ने पाकिस्तानी बलूच इलाके में अतिवादी समूह जैश उल अदल को निशाने पर लेकर 'दोस्ताना सर्जिकल स्ट्राइक' किया था, जिसमें दो बच्चे मारे गये थे। ईरान ने भी कहा था, पाकिस्तान इसका बुरा न माने। इस हमले से सबसे अधिक कोई डिस्टर्ब हो रहा है, तो वह है चीन। ईरान और पाकिस्तान दोनों चीन के हम प्याला-हम निवाला हैं। दोनों के भिड़ जाने का मतलब है, ग्वादर में चीनी परियोजना का सत्यानाश। 7 जून, 2023 को चीन ने पहली बार पाकिस्तान-ईरान के साथ पेइचिंग में त्रिपक्षीय बैठक की थी। विषय दो मित्रों के बीच तनाव कम करना और आतंक विरोधी रणनीति पर अमल करना था। 16 मई, 2013 को चीन ने ग्वादर पोर्ट का नियंत्रण पाकिस्तान से अपने हाथों ले लिया था। यह चीन की महत्वाकांक्षी योजना रही है, लेकिन लोकल बलूच उसे नापसंद करते रहे।

वर्ष 2022-23 तक चीन ने सीपीईसी प्रोजेक्ट पर जो 65 अरब डॉलर ख़र्च किये, उसका बड़ा हिस्सा ग्वादर पोर्ट पर लगा है। सिस्तान-बलूचिस्तान के जिस इलाके में पाकिस्तान ने हमला किया है, वह ग्वादर से लगभग 300 किलोमीटर की दूरी पर है। गुरुवार को पाक विदेश मंत्रालय ने बयान में कहा कि आज तड़के ही पाकिस्तानी फोर्स ने ईरान के सिस्तान ओ बलूचिस्तान प्रांत में कोह ए सब्ज़ स्थित आतंकवादियों के ठिकानों पर हमला किया। हमने 'ऑपरेशन मार्ग बर सर्माचार' के तहत कई आतंकवादियों को मार गिराया है। ईरानी हदों में रहने वाले पाकिस्तानी मूल के आतंकवादी, स्वयं को सर्माचार कहते हैं। सर्माचार का मतलब होता है, 'नेतृत्व देने वाला कमांडर।' मार्ग का अर्थ है, 'मौत'। और बर का अर्थ है 'ख़िलाफ़'। पाकिस्तान ने उसी के हवाले से 'ऑपरेशन मार्ग बर सर्माचार' रखा था, जिसका आशय था, 'ईरान में रहने वाले पाकिस्तानी मूल के आतंकवादियों के नेता के ख़ात्मे का अभियान।' पाकिस्तान ने कहा, 'हमने तथाकथित सर्माचारों को लेकर ईरान को कई सबूत सौंपे थे, और सबूतों के आधार पर कार्रवाई की है।' ईरानी गृहमंत्री अहमद वाहिदी ने क़ुबूल किया है कि मारे गये सभी नौ लोग 'विदेशी' हैं। पाकिस्तान इस हमले की संज़ीदगी को समझता है, और शायद यही वजह रही है कि दावोस में विश्व आर्थिक मंच की बैठक को बीच में छोड़कर उसके कार्यकारी प्रधानमंत्री अनवारूल हक ककर और विदेश मंत्री इस्लामाबाद लौट आये हैं।

ईरान ने पाकिस्तान में हमला 16 जनवरी को किया था। उससे एक दिन पहले भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ईरान पहुंचे थे। उनकी मुलाक़ात ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी और अपने समकक्ष आमिर-अब्दोल्लाहिआन से हुई थी। मालूम नहीं एस. जयशंकर इस कार्रवाई से कितना वाकिफ थे, मगर भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर लिखा, 'हम आतंकवाद को लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति रखते हैं। हमारा मानना है कि कोई देश आत्मरक्षार्थ ऐसे कदम उठा सकता है।' ठीक से देखा जाए तो भारत ने अपने बयान के ज़रिये अतीत में पाकिस्तान पर किये सर्जिकल स्ट्राइक को न्यायोचित ठहराया है। लेकिन उसकी कूटनीतिक व्याख्या की जाए तो ईरान और पाकिस्तान ने एक-दूसरे की सीमाओं का उल्लंघन कर जो हमले किये, उसे सही ठहराना भी मुश्किलों को दावत देता है। अब पाक भी कह सकता है, कि हमने 'आत्मरक्षार्थ' ऐसा किया। पाकिस्तान का 'ऑल वेदर फ्रेंड' चीन ने कहा है कि दोनों देशों को संयम बरतना चाहिए। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने बयान दिया, 'हम इन हमलों की निंदा करते हैं। हमने देखा है कि ईरान ने पिछले कुछ दिनों में अपने तीन पड़ोसियों की संप्रभु सीमाओं का उल्लंघन कर रहा है। एक तरफ, ईरान इस इलाके में आतंकवाद का पनाह देने वाला देश है और दूसरी ओर वह दावा करता है कि उसने इन देशों पर कार्रवाई आतंकवाद से लड़ने के लिए की है।' अमेरिका ऐसे बयान से पाकिस्तान को अपने पाले में लेना चाहता है। पाक राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अलवी ने भी कहा कि हम कोई समझौता नहीं करेंगे। उधर ईरान जिस तरह से बयान देने में लगा है, उससे इस इलाके में लड़ाई बढ़ने की संभावना है।

टाइम लाइन को ठीक से देखा जाए, तो 900 किलोमीटर की ईरान-पाक सीमा पर आये दिन खुफियागिरी और आतंकी घटनाएं होती रही हैं। 2013 में जैश अल-अदल ने एक हमले में 14 ईरानी सैनिक मारे थे। 2014 में ईरानी सुरक्षा बलों के पांच सदस्यों का अपहरण कर लिया गया था। दिसंबर, 2010 में चाबहार में एक मस्जिद के पास आत्मघाती हमले में 41 लोग मारे गए और 90 अन्य घायल हो गए। 26 अप्रैल, 2017 को जैश अल-अदल ने मिर्जावेह में हुए हमले की जिम्मेदारी ली, जिसमें 10 ईरानी सीमा रक्षक मारे गए थे। 22 जून, 2017 को पहली बार ईरान के किसी ड्रोन को पाकिस्तान ने मार गिराया था। 17 अप्रैल, 2018 को सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत के मिर्जावेह शहर में तीन ईरानी सुरक्षाकर्मियों की हत्या कर दी। 16 अक्तूबर, 2018 जैश अल-अदल ने 12 ईरानी सुरक्षा कर्मियों को अगवा कर लिया था। उसी साल 6 दिसंबर को ईरान के चाबहार में पुलिस मुख्यालय पर आत्मघाती कार बम हमले में चार पुलिसकर्मी मारे गए और 42 अन्य लोग घायल हो गए। फरवरी, 2021 में ईरानी सैनिक दो खुफ़िया एजेंटों को बचाने के लिए पाकिस्तानी क्षेत्र में घुस गए। 8 फरवरी, 2024 पाकिस्तान में चुनाव है। सवाल चुनाव के हवाले से भी उठ रहा है कि दोनों तरफ़ से हमलों का मतलब क्या हो सकता है। ईरान और पाकिस्तान नौ सदस्यीय शंघाई कॉर्पोरेशन आर्गेनाइजेशन के मेंबर भी हैं। तो क्या ये एससीओ के बाकी सदस्य देशों की बात सुनेंगे? पाक विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मुमताज ज़हरा बलूच ने कहा कि पाकिस्तानी सेना ने खुफिया जानकारी के आधार पर ऑपरेशन चलाया, और ईरान में आतंकवादियों की मौजूदगी के उपलब्ध सबूतों के आधार पर आतंकवादियों को मार गिराया। वैसे, पाकिस्तान को यह साबित करना चाहिए कि जो महिला और बच्चे मारे गये हैं, वो क्या सचमुच आतंकवादी थे? यों, दोनों तरफ़ के सर्जिकल स्ट्राइक से ये न समझा जाए कि हिसाब बराबर हो गया।

आजकल

चीतों की मौत से उपजे सवाल ?

मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों की मौत की घटनाएं यह बताने के लिए काफी हैं कि उत्साह के बरक्स संरक्षण को लेकर दूरदर्शिता में कमी और पारिस्थितिकी की बारीकियों को नजरअंदाज करना कैसे नतीजे दे सकता है। गौरतलब है कि मंगलवार को कूनो उद्यान में 'शौर्य' नाम के एक चीते की मौत हो गई। नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाए गए चीतों में से अब तक दस की मौत हो चुकी है।

कुछ समय पहले से ऐसी लगातार घटनाओं को लेकर चिंता जताई जा रही है और अपेक्षा की जा रही है कि सरकार बचे हुए चीतों के जीवन की सुरक्षा के लिए जरूरी उपाय करेगी। मगर जिस तरह कुछ अंतराल पर चीतों की मौत की खबरें आ रही हैं, उससे यह सवाल उठ रहा है कि क्या भारत का मौसम इन चीतों के लिए प्रतिकूल है या फिर यह व्यवस्था और देखरेख में कमी की वजह से उपजी समस्या है। आखिर क्या वजह है कि नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाए जाने के कुछ समय बाद चीतों के मरने का सिलसिला शुरू हो गया? अपने मूल देशों के जलवायु में रचे-बसे चीतों को भारत में लाने के साथ क्या यह सुनिश्चित किया गया कि उन चीतों को उनके अनुकूल पारिस्थितिकी मिल सके, ताकि वे अपना स्वाभाविक जीवन जी सकें!

भारत में 1952 में आधिकारिक रूप से एशियाई चीतों के लुप्त होने की घोषणा कर दी गई थी। हालांकि उन्नीसवीं सदी के पहले तक भारत और समूचे एशिया में चीते आम थे। मगर बेलगाम शौक के तहत चीतों को कैद करने या फिर उनका शिकार करने की वजह से इस क्षेत्र के ज्यादातर देशों में एशियाई कहे जाने वाले चीते खत्म हो गए। अब करीब सात दशक बाद भारत में चीतों को फिर से बसाने के लिए 'प्रोजेक्ट चीता' के तहत प्रयास शुरू तो हुए, मगर इस बीच कूनो में जो चीते लाए गए, वे अफ्रीकी आबोहवा से जीवन पाने वाले हैं। इस बारे में आई एक खबर में शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के हवाले से यह भी बताया गया कि इस पुनर्वास के दौरान 'स्थानीय पारिस्थितिकी' के पहलू को नजरअंदाज किया गया। इन चीतों की जरूरत के मुकाबले कूनो राष्ट्रीय उद्यान के आकार को भी बहुत कम बताया गया। हालांकि इस मसले पर उपजी आलोचनाओं और सुप्रीम कोर्ट की ओर से जताई गई चिंता के बाद सरकार ने पिछले साल यह सफाई दी थी कि इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि चीतों की मौतें किसी अंतर्निहित अनुपयुक्तता की वजह से हुईं।

पाक सियासत में हिंदू नारी से आशाएं

अरुण नैथानी

यूं तो अक्सर पाकिस्तान से हिंदू अल्पसंख्यक लड़कियों के अपहरण और धर्म परिवर्तन की ही खबरें आती हैं। लेकिन पिछले दिनों एक अच्छी खबर आई कि पहली बार किसी अल्पसंख्यक हिंदू बेटी को उत्तर पूर्वी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत की एक सीट से चुनाव लड़ने का मौका मिला है। सामान्य सीट से लड़ने वाली सवीरा पाक की पहली हिंदू महिला हैं। एक महिला का चुनाव लड़ना इस पिछड़े इलाके में अचरज जैसा है। ऐसा इलाका जहां महिलाएं कपड़ों से लिपटी ही पुरुषों के साथ घर से बाहर निकल सकती हैं। इतना ही नहीं, कई महिलाओं को वोट डालने का भी मौका नहीं मिलता। ऐसे इलाके में सवीरा घर-घर जाकर वोट के लिये संपर्क साध रही हैं। दरअसल, सवीरा को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने बूनेर सीट से टिकट दिया है। आज गुमनाम बेनूर-सा बूनेर पूरे पाकिस्तान ही नहीं पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है।

दरअसल, कुछ समय पूर्व तक बूनेर का इलाका पाक सेना व सुरक्षा बलों की संयुक्त कार्रवाई से चर्चा में आया था। दरअसल, इस सदी के पहले दशक में चरमपंथी संगठन तहरीक-ए-तालिबान ने स्वात घाटी पर कब्जा कर लिया था। कालांतर तालिबान ने अपनी सीमा का विस्तार बूनेर तक कर लिया था। कई जगह कब्जा करके अपनी पोस्ट बना ली थी। जिसे खाली कराने के लिये सेना ने बूनेर में ऑपरेशन ब्लैक थंडरस्टॉर्म चलाया था। जो मीडिया की सुर्खियां बना था। लेकिन अब यह छोटा शहर सवीरा प्रकाश की ख्याति से चर्चाओं में है।

वास्तव में स्वात घाटी के निकट स्थित बूनेर पश्तून बहुल इलाका है। पाकिस्तान की राजधानी से करीब सौ किलोमीटर दूर स्थित बूनेर कभी स्वात रियासत का हिस्सा था। सवीरा अब खुद को भी पख्तून संस्कृति का हिस्सा मानती है। जिसकी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएं और रिवाज हैं। वह कहती है कि यह एक समावेशी समाज है जिसके चलते उनके परिवार को कभी किसी तरह के भेदभाव का शिकार नहीं होना पड़ा। जहां तक राजनीति में आने का सवाल है तो उन्हें घर में राजनीतिक रूप से जागरूकता का वातावरण मिला है। उनके पिता इलाके में एक चिकित्सक व समाजसेवी के रूप में पहचान रखते हैं। पिता सामाजिक कार्यों में तो

संलग्न रहे ही हैं, साथ ही सक्रिय राजनीति में भी रहे हैं। वे पिछले तीन दशक से पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं।

यूं तो सवीरा पेशे से एक डॉक्टर हैं और सरकारी अस्पताल में सेवाएं दे रही हैं। लेकिन यह इलाका सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है। उन्हें लगता है कि इस पिछड़े और आधी दुनिया के अंधेरे वाले समाज में वह सिर्फ चिकित्सक की भूमिका से सामाजिक बदलाव नहीं ला सकती है। वह कहती है कि इस इलाके के सामाजिक उत्थान के मकसद से वह राजनीति में आ रही है। उनका मानना है कि जब उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई शुरू की तो मकसद समाज के वंचित व कमजोर वर्गों के हितों का ही ध्यान था। राजनीति में आने का मकसद भी मानवीय सरोकार ही हैं। वह कहती हैं कि मुझे लगता था कि एक डॉक्टर की भूमिका में मैं वह बदलाव नहीं कर सकती, जो व्यापक सामाजिक बदलावों का वाहक बन सके। वह चाहती है कि इन लक्ष्यों के लिये हमें अपने सिस्टम में सुधार लाने की जरूरत है, जो राजनीतिक ताकत के जरिये ही हासिल किया जा सकता है।

दरअसल, सवीरा का भरोसा है कि क्षेत्र का प्रतिनिधि बनकर वह आधी दुनिया के वाजिब हकों को दिलाने में सक्षम होगी। वह क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य व पर्यावरण से जुड़े मुद्दों का वे समाधान करना चाहती हैं। दरअसल, इस पिछड़े इलाके में लड़कियों के आगे बढ़ने के मौके बहुत कम हैं। पहले तो उन्हें पढ़ने का अवसर ही नहीं मिलता। एक तो आर्थिक कमजोरी और दूसरा मानसिक गरीबी कि लड़की घर से बाहर न निकले। सवीरा इस लीक को तोड़ना चाहती है। सवीरा चाहती हैं कि लड़के-लड़कियां मदरसों से बाहर निकलकर आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर सकें। ताकि मां-बाप लड़कियों को घरों में काम करने के लिये भेजने के बजाय स्कूल भेजें।

वैसे सवीरा की आगे की राह आसान भी नहीं है। वह लोगों से वोट मांगने नुक्कड़ सभाओं और बैठकों में जाती है तो असहज हो जाती है। दरअसल, इस पिछड़े इलाके में सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी नगण्य ही है। हालांकि कई सभाओं में वह अकेली महिला होने पर अजीब अनुभव करती है। लेकिन स्थानीय लोग इस परिवार के समाज के लिये योगदान के चलते सकारात्मक प्रतिसाद दे रहे हैं। राजनीतिक प्रतिबद्धताओं से इतर लोग उन्हें समर्थन देने की बात कर रहे हैं। उनके पिता का रसूख भी उनके काम आ रहा है। जिससे उनका मनोबल बढ़ा भी है। वह कहती है कि हम इसी मिट्टी में पले-बढ़े हैं।